Artistic Narration Dec. 2014, Vol. VI http://anubooks.com/product/artistic-narration
(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

7

# ललित कलाओं में संगीत

**डॉ. ओमप्रकाश चौहान***

ललित कलाओं के भिन्न–2 वर्गीकरण को देखने–समझने के पश्चात् ललित कलााअें में संगीत का स्थान क्या है? यह जानने से पूर्व अन्य ललित कलाओं जैसे कात्य कला, चित्राकला, मूर्तिकला एवं वास्तुकला आदि कया है? और संगीत की इसमें क्या स्थिति है? इसका विवरण आगे दिया जा रहा है। सर्वप्रथम–

**काव्य कला**

काव्य कला का आधर शब्द है। यूँ कहा जा सकता है कि मनुष्य जब अपने भावों की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से करता है, तो काव्य की रचना होती है। यह भी कहा जा सकता है कि काव्य भावों का शब्दात्मक चित्रा है। संस्कृत वाड्मय में 'काव्य' बहुत व्यापक शब्द है। उसके अंतर्गत साहित्य की सभी विधएं समा जाती हैं, कुछ विद्वानों ने नाट्य को दृश्यकात्य के रूप में पृथक भी गिनाया है तथा नाट्य में काव्य (साहित्य) के उपरांत जिन विभिन्न विधओं, कलाओं, कौशल का सुयोग है ;संगीत, चित्रा, वास्तु, कला, अभिनयादिद्ध उसको देखते हुए समीचीन भी जान पड़ता है।

काव्य रचना के आवश्यक उपकरण शब्द, लय, भाषा, छंद, भाव, कागज़ और लेखनी आदि हैं। जिन की अनुपस्थिति में काव्य का निर्माण संभव नहीं। काव्य कला के वर्णन के पश्चात् चित्राकला का वर्णन अग्रलिखित है।

**चित्रा कला**

प्रकृति के जीते–जागते कृत्यों को कागज़, लकड़ी, वस्त्रा अथवा किसी अन्य पदार्थ पर अंकित करने का नाम ही चित्राकला है। चित्राकला में कलाकार रंग, ब्रश तथा कैनवॉस के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। चित्राकार को आड़ी–तिरछी रेखाओं एवं रंगों का प्रयोग इस कुशलता के साथ करना होता है कि वे अपने पूर्ण परिप्रेक्ष्य में स्थित दिखलाई पड़े–अर्थात उनकी लघुता, गुरूता, दूरी–समीपता का क्रम निर्वाह वैसा ही हो जैसा वास्तविक जगत में दिखाई पड़ता है। इससे कृति में सजीवता आती है।

चित्रा रचना भिन्न–भिन्न प्रकार के आधर पर की जा सकती है जैसे कि दीवार पर, लकड़ी पर, कपड़े पर तथा कागज़ पर। जो चित्रा दीवार पर बनाए जाते हैं उन्हें भित्तिचित्रा भी कहा जाता है। जो चित्रा लकड़ी पर बनाए जाते हैं, उन्हें चित्राफलक भी कहा जाता है। जो चित्रा कपड़े पर बनाए जाते हैं उन्हें चित्रापट भी कहा जाता है। वर्तमान में चित्रा रचना कागज़ पर भी की जाती है जो कि सर्वाधिक प्रचलित है। चित्राकला के मुख्य भौतिक उपकरणों में कागज़, कैनवॉस, तूलिका, रंग आदि हैं जिनकी उपस्थिति के बिना चित्राकला का निर्माण संभव नहीं है। काव्य व चित्राकला के उपरांत अब मूर्तिकला का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है।

**ऐसोसियेट प्रो0., राजकीय स्नात्कोतर महाविद्यालय सोलन, हि.प्र.*

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

**मूर्तिकला**

किसी धातु अथवा पदार्थ को इच्छित रूप व आकार प्रकार प्रदान करना ही मूर्तिकला कहलाता है। मूर्तियाँ विभिन्न धतु अथवा पदार्थों से बनाई जाती हैं। जैसे–सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, कांसा, अष्टधतु, मिट्टी, लकड़ी, पत्थर, मोम, हाथी दाँत, अस्थि, शंख, सीप, लाख, गंधक, सींग तथा काँच आदि। मूर्तिकला इन माध्यमों से अनेक प्रकार की मूर्तियाँ बनाता है तथा मूर्तियों के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। मूर्ति को मनचाहा रूप देने के लिए मूर्तिकार हथौड़ा अथवा छैनी का प्रयोग करता है।

मूर्तियाँ बनाने की अनेक विध्यिाँ हैं जैसे गढ़कर मूर्तियाँ बनाना, पीटकर मूर्तियाँ बनाना, हाथ से मूर्तियाँ बनाना, औज़ारों से मूर्तियाँ बनाना, साँचों से मूर्तियाँ बनाना, कुण्डली के द्वारा मूर्तियाँ बनाना आदि। मूर्तिकला के लिए आवश्यक साध्नों जैसे पत्थर, चूना, प्लास्टर, छैनी, हथौड़ी आदि के अभाव में मूर्तियों का निर्माण संभव नहीं है। मूर्तिकला के पश्चात् अब वास्तुकला पर चर्चा की जा रही है।

**वास्तुकला**

'वास्तु' शब्द की उत्पति 'वस' धतु से हुई है, जिसका अर्थ 'निवास करना' होता है और 'वास्तु' का अर्थ है 'वह भवन जिसमें मनुष्य निवास करते है।' अतः इसे भवन निर्माण कला भी कहा जाता है। किंतु 'वास्तुकला' शब्द का प्रयोग अत्यंत विस्तृत अर्थ में होता है, जिसमें गृह, वाटिका, बंध्, सेतु, प्रत्येक प्रकार का भवन तथा तड़ाग आदि सभी के निर्माण की कला का समावेश हो जाता है।

वास्तुकला में सभी ललित कलाओं की अपेक्षा अध्कि साध्नों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है, जैसे–ईंट, पत्थर, मिट्टी, चूना तथा लकड़ी आदि। उपकरणों में छैनी, हथौड़ी तथा खुरपी आदि की आवश्यकता होती है। जिनकी उपलब्ध्ता के बिना वास्तुकला का निर्माण संभव नहीं है। उपरोक्त वर्णित चारों ललित कलाओं के उपरांत आइये अब बात करते है– संगीत कला की।

**संगीत कला**

संगीत वह ललित कला है जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं। संगीत कला के बारे में हम विस्तृत वर्णन प्रथम अध्याय में कर चुके है किंतु विषय के अनुरूप यहां दोबारा से संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत है।

आम बोलचाल की भाषा में संगीत को केवल गायन समझा जाता है, किन्तु संगीत के अंतर्गत गायन, वादन एवं नृत्य तीनों का समावेश है। गायन, वादन एवं नृत्य तीनों एक–दूसरे के पूरक है। गायन, वादन एवं नृत्य की, वादन, गायन एवं नृत्य की तथा नृत्य, गायन एवं वादन की सहायता करता है। गायन, वादन एवं नृत्य की त्रिवेणी को संगीत कहा जाता है। पं. शारंगदेव ने अपने ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' में संगीत की परिभाषा इस प्रकार दी है–'गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं त्रायं संगीतमुच्यते।' अर्थात् गायन, वादन एवं नृत्य इन तीनों का सम्मिलित रूप संगीत कहलाता है। संगीत एक ऐसी ललित कला है जिसकी उत्पति के लिए किसी भौतिक अथवा स्थूल साध्नों की आवश्यकता नहीं होती। केवल शब्द अथवा नाद ही इस कला का आधार है।

विभिन्न ललित कलाओं के अभिव्यंजक माध्यम की पृथकता के फलस्वरूप उनके मूल्यांकल में पारस्परिक अन्तर उपस्थित हो जाता है। माध्यम अथवा मूर्त आधार की मात्राा तथा सूक्ष्मता के

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

अनुसार ही ललित कलाओं की श्रेणियां उत्तम और मध्यम स्तर की होती है। जिस कला में मूर्त आधर जितना कम रहता है, वह कला उतनी ही उच्च कोटि की समझी जाती है। कलाकार अपनी मानसिक अभिव्यक्तिको भिन्न–भिन्न रूपों में प्रकट करता है। कलाकार अपनी मानसिक अभिव्यक्ति को धरण करती है। इन्हीं बाह्म रूपों को धरण करने में कभी एक तो कभी अनेक उपकरणों का सहारा लेना पड़ता है। भौतिक सामग्री तथा उपकरण, उपयोगिता, प्रभाव क्षेत्रा आदि के आधर पर हम इन कलाओं का स्थान तथा इनमें संगीत के स्थान को निश्चित कर सकते हैं।

**संगीत द्वारा चमत्कारी प्रभाव सम्भव**

ललित कलाओं में काव्य एवं संगीत अपने–अपने आन्तरिक गुणों के आधर पर जड़ और चेतन वस्तुओं को अपनी गरिमा से प्रफुलिल्त करता है किन्तु काव्य केवल मानव मात्रा की समझ का विषय है वह भी वर्ग विशेष के लिए। काव्य द्वारा न तो चमत्कारी क्रियाएँ दर्शायी जा सकती हैं और न ही यह जड़ वस्तुओं को प्रभावित करता है। काव्यकार अत्यध्कि सहजता से शब्दों का चुनाव करके उसे कविता के साँचे में ढालता है किन्तु काव्य को सुनकर मनुष्य मंत्रा–मुग्ध भले ही हो जाए पर जीव–जन्तुओं पर उसका प्रभाव लेशमात्र नहीं होता क्योंकि जीव–जन्तु अपनी मानसिक शक्ति के अभाव में काव्य के उन्मेष का आनन्द उठाने में समर्थ नहीं है। इसके विपरीत संगीत कला में ऐसी अद्भूत सामर्थ्य है कि मानव तो क्या पशु–पक्षी, जीव–जन्तु तथा वनस्पति आदि सभी हर्षित हो उठते हैं। संगीत की मधुर झंकार से मस्त होकर सर्प और सिंह आदि निर्दयी पशु भी अपनी सुध खो बैठते हैं, घोड़े, बैल आदि अपने गले में बंधी घंटियों से उत्पन्न लय में मग्न होकर चलते रहते हैं। संगीत में इतनी शक्ति है कि संगीत सम्राट तानसेन के दीपक राग गाने से अग्नि प्रज्जवहलत हो उठने की किम्वदन्ती जगत प्रसिद्ध है।

शेर जैसे भयानक, शक्तिशाली और हिंसक पशु पर नियंत्राण करने के विषय में एक घटना प्रसिद्ध है कि लखनऊ के चिड़िया–घर में एक अत्यन्त खुंखार शेर को कोमल गंधर के विशिष्ट प्रकार के प्रयोग से पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने वश में कर जानवर की भांति अपनी पूंछ हिलाने लगा। एक और किम्वदन्ती के अनुसार एक बार मृदंग वादक 'कुदऊ सिंह' ने 'गणेश परण' बजाकर प्राण लेने वाले हाथी को भी मृदंग की ध्वनि द्वारा ठीक कर लिया था।

संगीत द्वारा पशु–पक्षियों के स्वास्थ्यवर्ध्न के उदाहरण भी देखने–सुनने को मिलते हैं। चीन के प्रमुख समाचार पत्रा 'पीपुल्स डेली' की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि तैयुआन के एक डेरी फार्म में कोमल और हल्के संगीत का आयोजन करने से गऊएँ अधिक दूध देने लगती हैं।

पशु–पक्षियों के अलावा पेड़–पौधें एवं वनस्पति आदि पर भी संगीत का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अन्नामलाई विश्विद्यालय के वनस्पति शास्त्र के प्रमुख डॉ. टी.सी.एन. सिंह द्वारा किए गये अनेक प्रयोग इस बात की पुष्टि करते हैं कि वनस्पति, संगीत से निश्चित रूप से प्रभावित व लाभान्वित होती है। भारतवर्ष में खेतों की बुआई, सिंचाई, कटाई आदि के समय कुछ विशेष ध्नों में गीत गाने की परम्परा है।वैज्ञानिकों ने पेड़–पौधें पर इन गीतों के प्रभाव का अध्ययन कर लाभकारी सिद्ध किया है।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

**संगीत द्वारा रोगोपचार**

संगीत चिकित्सा का प्रावधन प्राचीन काल से ही प्रचार में है। संगीत से चिकित्सात्क संभावनाएं वर्तमान समय में भी प्रमाणित हो चुकी हैं। संगीत के माध्यम से अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा संभव है। कहा जाता है कि भारत के प्रसिद्व संगीतज्ञ ओंकार नाथ ठाकुर ने इटली के तानाशाह मुसोलिनी जिसे अनिद्रा रोग था को अपने गायन से ही सुला दिया था। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि संगीत मन की तीनों अवस्थाओं चेतन, अवचेतन तथा अचेतन पर प्रभाव डालता है। मानसिक रोगों के उपचार हेतु किए गए सांगीतिक प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए हैं। मूर्ध्न्य मनोरोग चिकित्सक पीटर न्यूमेन और माईकल सेन्डर्स ने एक ऐसा मनोरोग चिकित्सालय प्रारम्भ किया, जहां उपचार में संगीत वादन का ही प्रयोग किया जाता है।

राकेश कुमार सक्सेना ने संगीत पत्रिाका में एक लेख में विभिन्न रागों द्वारा अनेक रोगों के उपचार को स्वीकारा है। इनके अनुसार 'भैरव' राग कफ सम्बन्धी रोगों के उपचार हेतु, मल्हार, सोरठ व जयजयवन्ती शरीर की उर्जा बढ़ाने व क्रोध को दूर कर मस्तिष्क को शांति प्रदान करने हेतु, आसावरी रक्त, कफ तथा वीर्य सम्बन्धी व्याध्यिों के निवारण हेतु, भैरवी सर्दी, दमा, इनफ्रयुऐंजा, प्युरिसी, ब्रांकाइटिस व क्षयरोग के निवारण हेतु, गुर्जरी, बागेश्वरी तथा मालकौंस राग दमा व कफ रोगों में, सारंग सिरदर्द व पित्त के रागों मेंऋ भीमपलासी, मुल्तानी, पटदीप व पटमंजरी राग नेत्रा रोगों मेंऋ दरबारी हृदय रोग व गठिया रोगों मेंऋ हिंडोल तिल्ली रोग में तथा पंचम राग पेट के रोगों के निवारण हेतु उत्तम बताया गया है।

आज की भागदौड़ से भरी जिंदगी में संगीत व्यक्ति को शांति व उर्जा प्रदान करता है। जिसका प्रमाण यह है कि आज बड़े–बड़े कार्यालयों में, प्राईवेट सैक्टर्स में और बड़ी–बड़ी कम्पनियों आदि में भी दिमागी काम करने वाले स्थानों पर धीमी व मधुर आवाज़ में शास्त्रीय वादन कैसेट्स या सी.डीज द्वारा होता रहता है। जिससे काम करने का माहौल व वातावरण तैयार होता है। ऐसी जगहों पर काम करने वाले व्यक्तियों से बात करने पर पाया गया कि इस प्रकार के संगीत से उन्हें मानसिक शांति व ताज़गी का अनुभव होता है, व काम करने के लिए अध्कि उर्जा बनी रहती है।

उपरोक्त वर्णन के आधर पर हम कह सकते है कि काव्य बहुत ही उच्चकोटि की कला है और संगीत की सहगामिनी भी है। किंतु संगीत बिना काव्य के भी जड़–चेतन को आकर्षित कर सकता है, जबकि काव्य बिना संगीत के मननशील, प्रखर बुद्धि वाले तथा साहित्यिक वर्ग तक ही सीमित होकर रह जाता है। अतः प्रत्येक दृष्टि से संगीत अपनी गहनता, सूक्षमता, तथा माधुर्य के बल पर श्रेष्ठ है।

**संदर्भ ग्रंथ**

1. 'सरस' संगीत, डॉ. प्रदीपकुमार भूपेंद्रनाथ दीक्षित 'नेहरंग', पृ. 112
2. मूर्तिकला का इतिहास, एस.एम.असगर अली कादरी, पृ. 55
3. भारतीय सौंदर्यशास्त्रा का तात्त्विक विवेचन एवं ललित कलाएं, डॉ. रामलखन शुक्ल, पृ. 194
4. पं. शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर, व्याख्या और अनुवाकर्त्री सुभद्रा चौध्री, पृ. 12
5. भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 204

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

6. भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 121

7. भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 116

8. भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 113

9. संगीत ;पत्रिकाद्ध, जुलाई 1993, पृ. 4

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247